डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

पी० जी०, तृतीय सेमेस्टर — चतुर्दश पत्र

भारतीय काव्य-शास्त्र का इतिहास

आचार्य विश्वनाथ अपने साहित्य दर्पण में रस को काव्य की आत्मा मानते हुए उसकी कुछ विशेषताएँ बताया। उन्होंने कहा 'रस' अलौकिक है। यह ब्रह्मानन्द का सहोदर है। रस ज्ञान स्वरूप होता है। उन्होंने रस के चार अंग — स्थायी भाव, आलम्बन और उद्दीपन ये दो विभाव, कायिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक ये चारों अनुभाव तथा 33 संचारी भाव स्वीकार किया है।

अलंकार सम्प्रदाय — अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक भामह माने जाते हैं। उन्होंने काव्यालंकार नामक ग्रन्थ की रचना की। इनका समय छठी शताब्दी माना जाता है। इनके व्याख्याकार

Don't Let Yesterday Take Up Too Much Of Today. – Will Rogers

भामह विवरण तथा काव्यालंकार सार संग्रह के लेखक उद्भट और दण्डी, रुद्रट तथा जयदेव आदि अनेक आचार्य अलंकार सम्प्रदाय के अन्तर्गत आते हैं। दण्डी ने अलंकार पर काव्यादर्श नामक ग्रन्थ लिखा। इनका समय सातवीं शती माना जाता है। इन्होंने 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते' अर्थात काव्य के शोभाकार धर्म अलंकार है। अलंकार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता को मानते थे, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते। उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनदायक तत्व अलंकार है। अलंकार विहीन काव्य की कल्पना वैसे ही है जैसे गर्मी से रहित अग्नि की कल्पना।

रीतिसम्प्रदाय — इसके संस्थापक वामन हैं इनका समय 9वीं शताब्दी माना जाता है वामन ने काव्यालंकार सूत्र नामक ग्रन्थ की रचना की। इन्होंने काव्य में अलंकारों की

प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता को स्वीकार किया है। 'रीतिरात्मा काव्यस्य' यह उनका प्रमुख सिद्धान्त है, इसलिए उन्हें रीतिसम्प्रदाय के प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने वैदर्भी रीति, गौड़ी रीति, पांचाली रीति इन तीनों रीतियों का प्रतिपादन कि[या]। ये सौंदर्यशास्त्र के उद्भावक थे।

रीति के विवेचना करते हुए उन्होंने [कहा] है कि विशिष्ट पद रचना का नाम रीति है और गुणात्मा अर्थात रचना में माधुर्य आदि गुणों [का] समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशे[षता] ही रीति है। इस प्रकार इस सिद्धान्त में गुण [और] रीति का अत्यन्त घनिष्ठ संबंध है। अलंकारों [की] अपेक्षा गुणों का विशेष महत्व को प्रदर्शित कि[या] है। गुण काव्य-शोभा के उत्पादक होते हैं।

काव्य के मूलतः दो पक्ष हैं, ए[क] कथ्यपक्ष, जिसे हम विषय-वस्तु के विशेष- के अभिधान में और उससे अभिव्यक्त [illegible]

8.00 अनुभूति या रसादि की आंतरिक संवेदना में पाते
9.00 हैं। दूसरा है काव्य का शैली पक्ष, जिसमें
10.00 लय, छन्द, अलंकार, शब्दचयन गुण और
अलंकार की योजना का विवेचन होता है। पश्चि
00 के रोमांटिक कवि और आलोचक भी काव्य
का चमत्कार समग्रता में ही मानते हैं, और
कुछ ऐसी ही धारणा हिन्दी के छायावादी और
छायावादोत्तर आलोचकों की है। हमारे यहाँ
अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, रस, ध्वनि, औचित्य
चमत्कार जैसे विविध काव्य-सिद्धान्त
चल पड़े थे, वे सब मूलतः काव्य का
सौंदर्य ही हैं। इसी आधार पर रीति-
सम्प्रदाय की रचना हुई है।

किसी भी काव्य की रचना
करते समय कवि के द्वारा काव्य-लेखन के लिए
जो शैली काम में ली जाती है उसे ही काव
रीति कहते हैं। — 'विशिष्ट पद रचना रीति